ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का उनके व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन पर प्रभाव का अध्ययन

श्वेता पुरी
पूर्व सहायक प्राध्यापक,
महिला महाविद्यालय, भिलाई, (छत्तीसगढ़),
सुनीता बोकड़े
प्राचार्य, खालसा महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़),
एवं
के नागमणी
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा),
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़)

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में कोरबा जिले के किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का उनके व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु कक्षा ग्यारहवीं के 600 किशोर विद्यार्थियों का चयन अनुपातिक स्तरीकृत न्यादर्श प्रविधि के द्वारा किया गया है। किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि के मापन हेतु डी.एस.सिसोदिया एवं पूजा चैधरी (2012) द्वारा निर्मित मनोवैज्ञानिक समृद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। किशोर विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन के मापन हेतु श्वेता पूरी एवं डॉ. सुनीता बोकड़े (2024) द्वारा स्वनिर्मित व्यवहार विचलन मापनी एवं आलोचनात्मक चिंतन के मापन हेतु सी.जी. वेंकटेश मुर्ति (2015) द्वारा निर्मित आलोचनात्मक चिंतन मापनी का प्रयोग किया गया। अंतःक्रियात्मक परिकल्पनाओं के अध्ययन के लिए 2ग2ग3 कारक विश्लेषण का प्रयोग किया गया। भेदात्मक परिकल्पना के विश्लेषण हेतु ‘टी’ परीक्षण का प्रयोग किया गया। सह-संबंधात्मक अध्ययन हेतु कार्ल पियर्सन सह-संबंध गुणांक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।अध्ययन के निष्कर्ष मे किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का उनके व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया व किशोर विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

बीज शब्द: किशोर विद्यार्थी, मनोवैज्ञानिक समृद्धि, व्यवहार विचलन, आलोचनात्मक चिंतन, अंतःक्रियात्मक प्रभाव, सह-संबंध, किशोरावस्था।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध में किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का उनके व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। किशोरावस्था जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण होता है, जहाँ विद्यार्थी न केवल शारीरिक और मानसिक रूप से विकसित होते हैं, बल्कि उनका व्यक्तित्व भी धीरे-धीरे परिपक्व होता है। इस अवस्था में मानसिक संतुलन, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का बहुत बड़ा योगदान होता है। यदि विद्यार्थी मानसिक रूप से सशक्त होंगे, तो वे जीवन की चुनौतियों का सामना अच्छे से कर पाएंगे। वहीं दूसरी ओर, व्यवहार में विचलन किशोरों के लिए एक महत्वपूर्ण समस्या हो सकती है। इसमें चिड़चिड़ापन, आक्रामकता, आत्मविश्वास की कमी, अवसाद (डिप्रेशन) और अनुशासनहीनता जैसी समस्याएँ शामिल होती हैं, जो उनके शैक्षिक और सामाजिक विकास को बाधित कर सकती हैं। किशोरों में किसी भी विषय को गहराई से समझने और तर्कसंगत दृष्टिकोण अपनाने की क्षमता भी किशोरावस्था में विकसित होती है। यदि विद्यार्थी इस कौशल को अपनाते हैं, तो वे किसी भी विषय पर सतही सोचने के बजाय गहराई से विश्लेषण कर सकते हैं और सही निर्णय ले सकते हैं। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में किशोर विद्यार्थियों के मानसिक विकास, व्यवहार और सोचने-समझने की क्षमता का सीधा प्रभाव उनके भविष्य पर पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक होता है कि हम इन तीनों पहलूओं को गहराई से समझें और विद्यार्थियों को मानसिक रूप से सशक्त, व्यवहारिक रूप से संतुलित और आलोचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रेरित करें।

संबंधित शोध अध्ययन

मनोवैज्ञानिक समृद्धि से संबंधित शोध की समीक्षा

हपर्ट (2009) ने विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि के कारणों की जाँच की एवं अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि सकारात्मक व्यवहार और दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक समृद्धि को बढ़ाते है वहीं रोजलान एवं अन्य (2017) ने स्नातकोत्तर छात्रों के मध्य मनोवैज्ञानिक समृद्धि के अध्ययन में छात्रों की मनोवैज्ञानिक समृद्धि स्तर उच्च पाया।

शर्मा एवं शर्मा (2018) ने छात्रों के इंटरनेट की लत और मनोवैज्ञानिक समृद्धि के अध्ययन के निष्कर्ष में इंटरनेट की लत का मनोवैज्ञानिक समृद्धि पर नकारात्मक प्रभाव पाया तथा गुप्ता (2021) ने युवाओ के मनोवैज्ञानिक समृद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य पर सोशल मीडिया के प्रभाव के अध्ययन में, जो युवा सोशल मीडिया में अधिक समय बिताते हंै उनकी मनोवैज्ञानिक समृद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य निम्न पाया। वहीं ऑड्रिन एवं ब्लाया (2020) एवं एरोग्लू, पेकर एवं सेंगिज (2022) ने साइबर पीड़ितीकरण मनोवैज्ञानिक समृद्धि और सामाजिक क्षमता के सम्बन्ध का अध्ययन किया अध्ययन के निष्कर्ष में साइबर पीड़ित किशोरों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि को कम पाया।

भट्ट (2018) ने कश्मीर घाटी के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि के अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि में महत्वपूर्ण अंतर पाया वहीं पियर्सन स्टडी (2019) ने भारतीय शहरों के स्कूलों में तनाव को मनोवैज्ञानिक समृद्धि के निम्न होने का प्रमुख कारण के रूप में पाया तो पोतदार,

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

औधाकर एवं मोहिते (2019) ने महाराष्ट्र के कराड़ शहर के सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि के अध्ययन के निष्कर्ष में छात्रों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि पर उनके माता-पिता की शिक्षा एवं परिवार प्रकार के मध्य महत्वपूर्ण संबंध पाया।

इसी प्रकार निजोरोगे एवं जेन (2020) ने छात्रों के बदमाशी एवं मादक पदार्थों के सेवन का मनोवैज्ञानिक समृद्धि पर प्रभाव पाया। मोघे एवं मिश्रा (2024) एवं अग्रवाल,बख्त एवं मल्होत्रा (2024) ने विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि के अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं के मनोवैज्ञानिक समृद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया।

तजारोद, फजल एवं घासेमी (2014) ने जाहरोम में हाई स्कूल के छात्रों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि पर रचनात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन कौशल के प्रभाव का अध्ययन किया एवं अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि आलोचनात्मक चिंतन विषयों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि को बढ़ाते है। शरीफ एवं गोयल (2022) ने भी छात्रों के आलोचनात्मक चिंतन क्षमता एवं मनोवैज्ञानिक समृद्धि के बीच सम्बन्धो की जाँच की और निष्कर्ष में पाया कि आलोचनात्मक चिंतन कौशल मनोवैज्ञानिक समृद्धि को बढ़ाने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

व्यवहार विचलन से संबंधित शोध की समीक्षा

चेंग (2012) ने अपने छात्रों के विचलित व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक और छात्र शिक्षक संबंध एवं छात्र-अभिभावक संबंधों का विश्लेषण किया एवं निष्कर्ष के रूप में पाया कि अभिभावक-बाल संबंध और शिक्षक-छात्र के नकारात्मक संबंध व्यवहार विचलन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं वहीं रिबेलो (2015) ने किशोरों के विचलित व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों के अध्ययन करने पर पाया कि शैक्षिक प्रणाली परिवार, पालन-पोषण, साथियों और सामाजिक समर्थन प्रणाली जैसी विशेषताएं किशोरी के व्यवहार विचलन को प्रभावित करने मेंमहत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जयराम एवं कैरो (2017) एवं बर्मन एवं खानिकोर (2018) ने विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन के कारणों और प्रभाव को पता लगाने हेतु अध्ययन किया जयराम एवं कैरो (2017) ने निष्कर्ष में अनुचित पालन पोषण शैली, पारिवारिक पृष्ठभूमि, मीडिया के प्रभाव तथा मित्र समूह के व्यवहार विचलन का प्रमुख कारण के रूप में पाया।

चिकवाचर, ओयडेले, गनयानी (2016) ने मुतारे शहर के विद्यालय में शैक्षणिक प्रदर्शन पर विचलित व्यवहार के अध्ययन में पाया कि छात्रों के विचलित व्यवहार का उनके प्रदर्शन पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है नबीस्वा, मिसिगो एवं मखानू (2016) ने स्कूलों में सबसे विचलित व्यवहार का विश्लेषण किया और अध्ययन के निष्कर्ष में पाया की छात्रों में पाये जाने वाले विचलित व्यवहार में सबसे ज्यादा चोरी करने कि आदते है तथा सबसे कम बदमाशी थी। चोरी करने की आदत वाले छात्रों में सबसे अधिक एवं बदमाशी करने वाले छात्रों में कम व्यवहार विचलन पाया।

हनीमोग्लू (2018) ने शराब सेवन एवं धूम्रपान को विचलित व्यवहार हेतु प्रमुख कारन के रूप में पाया इसी प्रकार आसियाई (2019) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के विचलित व्यवहार और उसका शिक्षा पर प्रभाव के अध्ययन

में शहरी स्कूलों के छात्रों का व्यवहार विचलन ग्रामीण स्कूलों की तुलना में अधिक विचलित पाया साथ ही छोटे स्कूलों की तुलना में बड़े स्कूलों के छात्रों में अधिक विचलन पाया।

पटेल (2020) ने भारत में घटना सामाजिक नियंत्रण और बढ़ता व्यवहार विचलन पर अध्ययन के निष्कर्ष में सामाजिक नियंत्रण की कमी को छात्रों के व्यवहार विचलन हेतु प्रमुख कारण पाया औटे, पोइपोई और खसखला (2020) ने केन्या महाविद्यालय के छात्रों में माता-पिता का लगाओ लिंग और विकृत व्यवहार का अध्ययन किया अध्ययन के निष्कर्ष में छात्र-छात्राओं के व्यवहार विचलन में सार्थक अंतर पाया गया जिसमें छात्रों का व्यवहार विचलन अधिक पाया गया तथा अध्ययन में यह भी पाया गया की माता-पिता तथा बच्चों के बीच लगाव बच्चों के व्यवहार विचलन को प्रभावित करते हैं वहीं डुल्लास एवं अन्य (2021) ने भी विभिन्न प्रकार के विचलित व्यवहार के निर्धारक और व्यवहार विचलन से उनका संबंध विषय पर अध्ययन किया अध्ययन के निष्कर्ष में लिंग के आधार पर व्यवहार विचलन में सार्थक अंतर पाया एवं पारिवारिक संतुष्टि और विस्तृत व्यवहार के मध्य नकारात्मक सहसंबंध पाया। मोगबाना, एडवर्ड और चिनवे (2022) ने अपने अध्ययन में पाया कि स्कूल में भी कई ऐसे कारक होते हैं जिसका प्रभाव छात्रों के व्यवहार विचलन व उनकी शैक्षणिक कार्यों पर पड़ता है इसमें स्कूल संबंधी नियम भी मौजूद हो सकते हैंपरवीन, राजा, और भट (2023) ने अपने अध्ययन में व्यवहार विचलन एवं पालन पोषण की शैलियों की व्यापकता का पता लगाया और पाया कि किशोर छात्रों के बीच पालन पोषण की लोकतांत्रिक शैली सबसे आम है एवं विद्यालय में किशोर छात्रों का एक बड़ा प्रतिशत व्यवहार विचलन प्रदर्शित करता है।

आलोचनात्मक चिंतन से संबंधित शोध की समीक्षा

हैल्पर्न (2007) ने आलोचनात्मक चिंतन की प्रकृति एवं पोषण का अध्ययन किया और पाया कि किसी भी विषय के क्षेत्र के बारे में ज्ञान आलोचनात्मक चिंतन कौशल के लिए महत्वपूर्ण है वहीं अरिसोय एवं अयबेक (2021) ने गणित में विषय आधारित आलोचनात्मक चिंतन शिक्षा का आलोचनात्मक चिंतन कौशल और गुनों पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में गणित एवं आलोचनात्मक चिंतन के मध्य सकारात्मक साथ संबंध पाया। राज एवं अन्य (2022) ने शिक्षा में आलोचनात्मक चिंतन के महत्व का अध्ययन कर निष्कर्ष के रूप में शिक्षा में आलोचनात्मक चिंतन की भूमिका के साथ-साथ आलोचनात्मक चिंतन के रूपों चरणों एवं महत्व को भी देखा गया तो इनाम (2024) अंतर विषयक STEAM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित) के माध्यम से भारतीय छात्रों के आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ाने के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षा शास्त्र के किसी भी विषय के छात्रों के सफलता के लिए आलोचनात्मक चिंतन क्षमता आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार ली एवं अन्य (2022) ने मानविकी विषय में अध्यनरत महाविद्यालयीन छात्रों के लिए आलोचनात्मक चिंतन मूल्यांकन ढांचे का निर्माण पर अध्ययन कियाऔर निष्कर्ष में पाया कि कॉलेज के छात्रों की आलोचनात्मक चिंतन क्षमताओं को मापने के लिए विश्वसनीय साधन है।

लीच एवं टायलर (2011), शुबीना एवं कुलकाली (2019) एवं राजू, लावण्या एवं शशांक (2020) ने लिंग का आलोचनात्मक चिंतन पर प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष के रूप में लिंग का आलोचनात्मक चिंतन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पाया। मुराव्स्की (2014) ने आलोचनात्मक चिंतन की पृष्ठभूमि एवं कार्य स्थल में इसकी भूमिका की जाँच की गई और निष्कर्ष में पाया कि आलोचनात्मक चिंतन कौशल कार्यस्थल में भविष्य की शिक्षा पर प्रभाव डालते है इसी प्रकार गाजीवाकिली एवं अन्य (2014) ने छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन में आलोचनात्मक चिंतन की भूमिका का अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि विद्यार्थियों के सिखने की शैली के अनुरूप शिक्षण विधियों का उपयोग करके आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ाया जा सकता है।

शाहीन (2016) ने अंतराष्ट्रीय छात्रों की आलोचनात्मक से जुड़ी समस्याओं का अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि संस्कृतिक और भाषाई रूप से विविध परम्पराओ के छात्र आलोचनात्मक चिंतन के दृष्टिकोण से भिन्न होते है, जो की शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है।

रोया (2015) ने भारतीय किशोर छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में आलोचनात्मक चिंतन तर्क एवं तार्किक निर्णय निकालने की क्षमता का अध्ययन किया और अध्ययन के निष्कर्ष में आलोचनात्मक चिंतन तर्क क्षमता एवं तार्किक निर्णय क्षमता के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध पाया वहीं विटारसा एवं मुहम्मद (2023) ने सामाजिक विज्ञान के छात्रों की क्षमता के विकास के लिए आलोचनात्मक चिंतन एक आवश्यकता परियोजना का अध्ययन किया और पाया कि नागरिकता परियोजना शिक्षा मॉडल को अपनाना नागरिक शिक्षा विषय लेने वाले छात्रों मं◌े आलोचनात्मक चिंतन कौशल के विकास के लिए उपयुक्त है। तो नाग एवं द्विवेदी (2024) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के निर्णय लेने की क्षमता पर आलोचनात्मक चिंतन के प्रभाव का अध्ययन किया अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में विद्यार्थियों के निर्णय क्षमता एवं आलोचनात्मक चिंतन में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया और लिंग के सम्बन्ध में निर्णय क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर देखा गया। कुमारी (2024) इस अध्ययन के द्वारा यह पता लगाने और समझने का प्रयास किया गया कि कैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों के बीच आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा में एक परिवर्तनकारी कार्य हो सकती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग एवं विषय प्रकार का उनके व्यवहार विचलन पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
1. किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय प्रकार का उनके आलोचनात्मक चिंतन पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
2. किशोर विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर मनोवैज्ञानिक समृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. किशोर विद्यार्थियों के विषय के आधार पर मनोवैज्ञानिक समृद्धि का अध्ययन करना।
4. किशोर विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन के सहसंबंध का अध्ययन करना।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

अंत:क्रियात्मक परिकल्पनाएँ

1. किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का व्यवहार विचलन पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

1.1 किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का समाज में व्यवहार (व्यवहार विचलन के प्रथम आयाम) पर मुख्य एवं अंत:क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

1.2 किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का शाला में व्यवहार (व्यवहार विचलन के द्वितीय आयाम) पर मुख्य एवं अंत:क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

1.3 किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का परिवार में व्यवहार (व्यवहार विचलन के तृतीय आयाम) पर मुख्य एवं अंत:क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

1.4 किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का मित्र समूह में व्यवहार (व्यवहार विचलन के चतुर्थ आयाम) पर मुख्य एवं अंत:क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

भेदात्मक परिकल्पनाएँ

2. लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

2.1 विज्ञान एवं कला विषय के आधार पर किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

2.2 कला एवं वाणिज्य विषय के आधार पर किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

2.3 विज्ञान एवं वाणिज्य के आधार पर किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सहसम्बंधात्मक परिकल्पनाएँ

3. किशोर विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन के मध्य सहसंबंध सार्थक नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन की परिसीमाएँ

- अध्ययन की परिसीमा का निर्धारण निम्न प्रकार से किया गया है -

- अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 11 वीं के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- अध्ययन हेतु कोरबा जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का सम्मिलित रूप से चयन किया गया है।
- अध्ययन हेतु विज्ञान, कला एवं वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- शोधकार्य हेतु 600 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन हेतु छात्र - छात्राओं का सम्मिलित रूप से चयन किया गया है।
- प्रस्तुत शोध कार्य किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक के प्रभाव तक परिसीमित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध कार्य हेतु मनोवैज्ञानिक समृद्धि के लिए डी.एस. सिसोदिया एवं पूजा चैधरी (2012) द्वारा निर्मित मनोवैज्ञानिक समृद्धि मापनी का प्रयोग किया गया। व्यवहार विचलन हेतु स्वनिर्मित मापनी (2024) का प्रयोग किया गया तथा आलोचनात्मक चिंतन हेतु सी.जी. वेंकटेश मूर्ति (2015) आलोचनात्मक चिंतन मापनी का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या

जनसंख्या के अंतर्गत छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 11 वीं के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। कोरबा जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की संख्या 78 है, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कुल विद्यार्थियों की संख्या लगभग 8900 हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तो के संकलन के लिए कोरबा जिले के कक्षा 11वीं के कुल 600 किशोर विद्यार्थियों का चयन अनुपातिक स्तरीकृत न्यादर्श प्रविधि के द्वारा किया गया है जिसमे प्रत्येक विद्यालय से कुल विद्यार्थियों में से 20 प्रतिशत का चयन किया गया।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

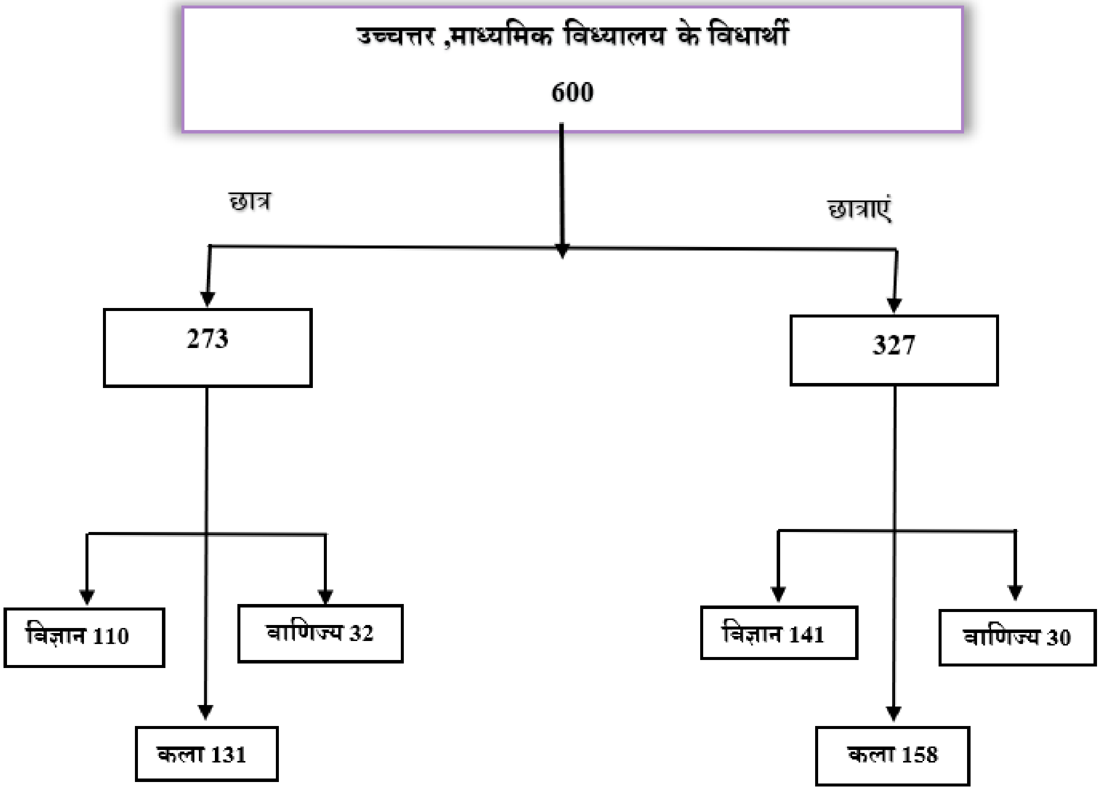

शोध अभिकल्प

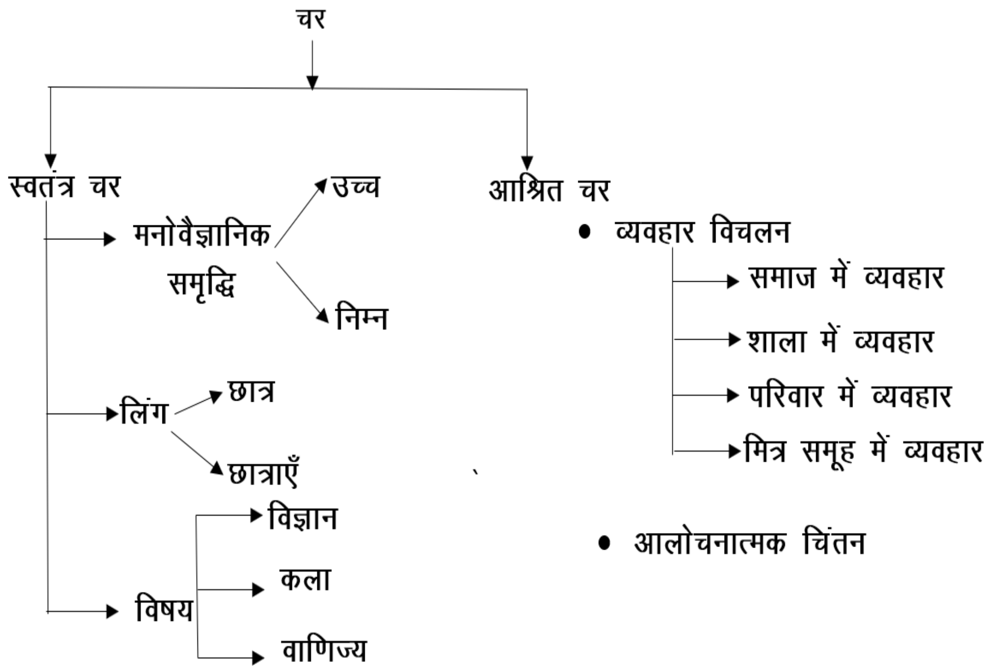

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का उनके व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया हैं। प्रस्तुत शोध में मनोवैज्ञानिक समृद्धि, व्यवहार विचलन और आलोचनात्मक चिंतन के मापन हेतु विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

क्रमांक	चर	उपकरण	निर्माणकर्ता	आयाम	पदों की संख्या	कुल पद
1.	मनोवैज्ञानिक समृद्धि	मनोवैज्ञानिक समृद्धि मापनी	डी.एस.सिसोदिया एवं पूजा चैधरी (2012)	संतुष्टि	10	50
				दक्षता,	10	
				सामाजिकता	10	
				मानसिक स्वास्थ्य	10	
				पारस्परिक संबंध	10	
2.	व्यवहार विचलन	व्यवहार विचलन मापनी	स्वनिर्मित श्वेता पूरी एवं डॉ. सुनीता बोकड़े (2024)	समाज में व्यवहार	17	45
				शाला में व्यवहार	12	
				परिवार में व्यवहार	8	
				मित्र समूह में व्यवहार	8	
3.	आलोचनात्मक चिंतन	आलोचनात्मक चिंतन मापनी	सी.जी. वेंकटेश मुर्ती (2015)	…	4	4

मनोवैज्ञानिक समृद्धि मापनी

मनोवैज्ञानिक समृद्धि के मापन करने के लिए डी.एस.सिसोदिया एवं पूजा चैधरी (2012) द्वारा निर्मित मनोवैज्ञानिक समृद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। इस मापनी को लिकर्ट तकनीक का उपयोग कर विकसित किया गया। इस पैमाने का अंतिम रूप 50 कथनों से तैयार किया गया, जिसका उद्देश्य संतुष्टि, दक्षता, सामाजिकता, मानसिक स्वास्थ्य और पारस्परिक संबंधों जैसे मनोवैज्ञानिक समृद्धि के कई पहलुओं को मापना था। परीक्षण की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण पुनःपरीक्षण विधि और आंतरिक संगति विधि का उपयोग किया गया। पुनःपरीक्षण विश्वसनीयता परीक्षण 0.87 पाई गयी तथा आतंरिक संगति मान 0.90 पाया गया जो कि उच्च विश्वसनीयता को दर्शाता है।

व्यवहार विचलन मापनी

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

किशोरों में व्यवहार विचलन को मापने के लिए स्वनिर्मित बंद प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। मापनी में कुल 45 कथन है जिनमें से 35 कथन नकारात्मक तथा 10 सकारात्मक है, जो कि किशोरों के व्यवहार से संबंधित है। इन आयामों सम्बंधित विवरण निम्नलिखित है:- समाज में व्यवहार, शाला में व्यवहार, परिवार में व्यवहार तथा मित्र समूह में व्यवहार। इनमे समाज में व्यवहार से संबंधित 17, शाला में व्यवहार से संबंधित 12, परिवार में व्यवहार से संबंधित 8 तथा मित्र समूह में व्यवहार से संबंधित 8 कथन है। इस प्रकार कुल 45 कथन है। प्रत्येक कथन के बाद 3 विकल्प - सदैव, कभी-कभी, कभी-नहीं है।

उपकरण की विश्वसनीयता स्प्लिट हाफ विधि द्वारा स्पीयरमैन ब्राउसी सूत्र से ज्ञात करने पर 0.99 पाई गई जो कि उच्च विश्वसनीयता को दर्शाती हैं। उपकरण की वैधता उच्च वैधता को दर्शाता हैं। अतः इस उपकरण को किशोर विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन ज्ञात करने के लिए प्रयोग किया गया।

आलोचनात्मक चिंतन मापनी -

आलोचनात्मक चिंतन मापने के लिए सी. जी वेंकटेश मूर्ति द्वारा निर्मित आलोचनात्मक चिंतन मापनी का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत मापनी में 4 परस्पर विरोधी परिस्थितियां दी हुई है, उत्तरदाता को स्वयं को उस परिस्थिति में रख कर उत्तर लिखना है। प्रत्येक परिस्थिति में उसे स्थिति का विश्लेषण करना है तथा उस स्थिति में स्वयं को रखकर उनके गुण व दोष लिखने हैं। उत्तरदाता को यह भी लिखना है कि वह प्रत्येक स्थिति में अपनी राय का कैसे निष्कर्ष निकलता है।

विश्वसनीयता की गणना स्प्लिट-हाफ और क्रैनबैक के अल्फा दोनों विधि का उपयोग करके की गई। स्पष्ट है कि इस पैमाने की विश्वसनीयता संतोषजनक है। यह पैमाना कंटेंट वैधता के अधीन था। मनोविज्ञान एवं शैक्षिक मनोविज्ञान के 10 विशेषज्ञ द्वारा आइटम्स, स्कोरिंग पैटर्न, प्रक्रिया एवं उत्पाद श्रेणी, प्रक्रिया एवं उत्पाद की व्याख्या की श्रेणी और सम्पूर्ण स्केल को मान्य किया।

सांख्यकीय विश्लेषण

प्रस्तुत अध्याय में विभिन्न विद्यालयो से संकलित किये गए प्रदत्तो की व्याख्या, विश्लेषण तथा विवेचना की गई है। इस शोध कार्य में निर्मित परिकल्पनाओ के आधार पर निम्न प्रकार से विश्लेषण एवं विवेचना की गई हैं:-

1. अंतः क्रियात्मक परिकल्पनाओं के अध्ययन के लिए 2ग2ग3 कारक विश्लेषण का प्रयोग किया गया।
2. भेदात्मक परिकल्पना के विश्लेषण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया।
3. सह-संबंधात्मक अध्ययन हेतु कार्ल पियर्सन सह-संबंध गुणांक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

परिणाम तथा विवेचना

कोरबा जिले के किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का उनके लिंग एवं विषय प्रकार के आधार पर उनके व्यवहार विचलन तथा उनके आयाम एवं आलोचनात्मक चिंतन का मुख्य एवं अंत:क्रियात्मक प्रभाव का विवरण

प्रसरण के स्रोत	किशोर विद्यार्थियों का व्यवहार विचलन	समाज में व्यवहार (व्यवहार विचलन के प्रथम आयाम)	शाला में व्यवहार (व्यवहार विचलन के द्वितीय आयाम)	परिवार में व्यवहार (व्यवहार विचलन के तृतीय आयाम)	मित्र समूह में व्यवहार (व्यवहार विचलन के चतुर्थ आयाम)	किशोर विद्यार्थियों का आलोचनात्मक चिंतन
मनोवैज्ञानिक समृद्धि	5.51 •	1.59	1.69 •	1.41 •	3.79 •	0.34 •
लिंग	16.90**	10.51**•	4.94**	8.70**	11.02**	4.80*
विषय प्रकार	0.28	0.16	0.06 •	0.13 •	0.16 •	0.47 •
मनोवैज्ञानिक समृद्धि x लिंग	22.06**	12.11**	6.64*	10.11**	14.82**	5.14*
लिंग x विषय प्रकार	8.73**	5.42**	2.54 •	4.48*	5.68**	2.87 •
मनोवैज्ञानिक समृद्धि x विषय प्रकार	2.86	0.96 •	0.91 •	0.83 •	2.06 •	0.68 •
मनोवैज्ञानिक समृद्धि x लिंग x विषय प्रकार	11.31**	6.22**	3.39*	5.18**	7.57**	3.04*

** = 0.01 स्तर पर सार्थक *= 0.05 स्तर पर सार्थक = सार्थक प्रभाव नहीं

उपरोक्त सारिणी में किशोर विद्यार्थियो के मनोवैज्ञानिक समृद्धि पर उनके व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन के प्रभाव को ज्ञात किया गया जिसके परिणाम निम्न है –

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का व्यवहार विचलन एवं उनके आयाम पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव -

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि एवं विषय प्रकार का उनके व्यवहार विचलन पर मुख्य प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया है इसका प्रमुख रूप से यह कारण हो सकता है, कि व्यवहार विचलन के मानसिक समृद्धि से प्रभावित नहीं होता अपितु उसमें पारिवारिक वातावरण शिक्षक का व्यवहार, आत्म संतुष्टि, मीडिया प्रभाव आदि व्यवहार विचलन के कारक हो सकते हैं। इसी प्रकार विद्यार्थी किसी भी विषय के हो उनका व्यक्तित्व, अनुशासन और भावनात्मक परिपक्वता व्यवहार विचलन के लिए निर्णायक हो सकते हैं।

किशोर विद्यार्थियों के लिंग का व्यवहार विचलन पर मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया, जिसमें छात्रों का व्यवहार विचलन छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया है इसका तात्पर्य यह है कि लड़के और लड़कियाँ व्यवहार विचलन के संबंध में अलग-अलग ढंग से व्यवहार करते हैं लिंग उनके व्यवहार पैटर्न को प्रभावित करता है। छात्रों में अधिक व्यवहार विचलन के लिए हार्मोनल संरचना प्रमुख कारण हो सकता है। छात्राएँ अपने भावनाओं को नियंत्रित करने में अधिक कुशल होती है, जिससे उनके व्यवहार में अधिक संतुलन दिखाई देता है। डोरोथी, मोसेस एवं ओकाया एडवर्ड (2020)इन्होंने भी छात्रों में छात्राओं की तुलना में व्यवहार विचलन अधिक पाया। डल्लास डेनिएल लाबिआनो (2021)ने भी लिंग के व्यवहार विचलन के मध्य सार्थक अंतर पाया।

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि x लिंग, लिंग x विषय प्रकार, मनोवैज्ञानिक समृद्धि, x लिंग x विषय प्रकार का उनके व्यवहार विचलन पर अंतर क्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया है। उच्च मनोवैज्ञानिक समृद्धि वाले बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व में मानसिक संतुलन, आत्म नियंत्रण, भावात्मक स्थिरता आदि गुण होने से वे अपने व्यवहार को संयमित करने में सक्षम होते हैं इसी के विपरीत कलहपूर्ण पारिवारिक वातावरण, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, अवसाद, चिंता विकार, आत्मविश्वास में कमी, शारीरिक शोषण विद्यार्थी के व्यवहार विचलन के कारण हो सकते हैं साथ ही लिंग का जैविक संरचना में अंतर, हार्मोनल संरचना के कारण व्यवहार विचलन पर प्रभाव दिखाई पड़ता है।

इसी प्रकार किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि x लिंग ग विषय प्रकार का अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया है उच्च मनोवैज्ञानिक समृद्धि वाले सभी विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं)का व्यवहार विचलन, निम्न मनोवैज्ञानिक समृद्धि वाले विद्यार्थियों से कम पाया गया है तथा छात्राओं की अपेक्षा छात्रों का व्यवहार विचलन अधिक पाया गया है साथ ही विषय प्रकार के आधार पर वाणिज्य विषय के छात्रों में व्यवहार विचलन सबसे अधिक पाया गया है तथा विज्ञान विषय के छात्रों का व्यवहार विचलन सबसे कम पाया गया। किशोर विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन पर मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग एवं विषय प्रकार का अंतर क्रियात्मक प्रभाव का कारण संभवतः भावात्मक संतुलन क्षमता सामाजिक प्रतिक्रिया और शिक्षा संस्कृति को प्रभावित करती है इसलिए तीनों चरणों के व्यवहार विचलन पर प्रभाव का कारण हो सकता है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का व्यवहार विचलन के प्रथम आयाम "समाज में व्यवहार" पर मुख्य एवं अंत:क्रियात्मक प्रभाव -

किशोर विद्यार्थियों के समाज में व्यवहार ;व्यवहार विचलन का प्रथम आयामद्ध पर मनोवैज्ञानिक समृद्धि एवं विषय चयन का मुख्य प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि किशोर समाज में दिखाने के लिए अलग व्यवहार करते हैं किंतु व्यक्तिगत एवं मानसिक रूप में अलग होते हैं इसी कारण विषय चयन का व्यवहार विचलन पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, इसका कारण यह है कि विद्यार्थियों का विषय प्रकार उनके सामाजिक व्यवहार को प्रभावित नहीं करता है।

किशोर विद्यार्थियों के समाज में व्यवहार ;व्यवहार विचलन का प्रथम आयामद्ध पर लिंग का मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया है जिसमें छात्रों का व्यवहार विचलन छात्राओं से अधिक पाया गया है। इसका तात्पर्य यह है कि भारतीय पितृसत्तात्मक परिवार, सामाजिक संघर्ष, सामाजिक दबाव बालकों को अधिक स्वायत्तता आदि कारक उनके व्यवहार विचलन को प्रभावित करते है।

किशोर विद्यार्थियों के समाज में व्यवहार ;व्यवहार विचलन का प्रथम आयामद्ध मनोवैज्ञानिक समृद्धि ग लिंग, मनोवैज्ञानिक समृद्धि ग विषय प्रकार, मनोवैज्ञानिक समृद्धि ग लिंग ग विषय प्रकार का अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया। उच्च मनोवैज्ञानिक समृद्धि के सभी विद्यार्थियों ;छात्र एवं छात्राएँ द्ध का समाज में व्यवहार विचलन, निम्न मनोवैज्ञानिक समृद्धि वाले विद्यार्थियों से कम पाया गया है तथा छात्राओं की अपेक्षा छात्रों का समाज में व्यवहार विचलन अधिक पाया गया है साथ ही विषय प्रकार के आधार पर कला विषय के छात्रों में व्यवहार विचलन सर्वाधिक पाया गया है जबकि विज्ञान विषय की छात्राओं में व्यवहार विचलन सबसे कम पाया गया।

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का व्यवहार विचलन के द्वितीय आयाम "शाला में व्यवहार" पर मुख्य एवं अंत:क्रियात्मक प्रभाव -

किशोर विद्यार्थियों के शाला में व्यवहार ;व्यवहार विचलन के द्वितीय आयामद्ध पर मनोवैज्ञानिक समृद्धि एवं विषय प्रकार का मुख्य प्रभाव नहीं पाया गया है। इसका कारण यह है कि विद्यालय में अनुशासन एवं नियमों के कारण विद्यार्थी मनोवैज्ञानिक संघर्षों को व्यक्त नहीं करते हैं औपचारिक विद्यालयीन वातावरण के कारण शाला में व्यवहार विचलन स्पष्ट दिखाई नहीं देता। इसी प्रकार किसी भी विषय का विषय प्रकार का किशोर विद्यार्थीयों के शाला में व्यवहार विचलन को प्रभावित नहीं करता।

किशोर विद्यार्थियों का शाला में व्यवहार ;व्यवहार विचलन का द्वितीय आयामद्ध पर लिंग का मुख्य प्रभाव पाया गया है। इसमें छात्र एवं छात्राओं के शाला में व्यवहार में तुलनात्मक रूप से छात्रों में व्यापार विचलन अधिक पाया गया है जिसका कारण जैविक रूप से छात्राए,ँ छात्रों से अधिक अनुशासित एवं संयमित्र व्यवहार प्रदर्शित करती है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का व्यवहार विचलन के तृतीय आयाम "परिवार में व्यवहार" पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव -

किशोर विद्यार्थी के परिवार में व्यवहार ;व्यवहार विचलन का तृतीय आयामद्ध मनोवैज्ञानिक समृद्धि ग लिंग, मनोवैज्ञानिक समृद्धि ग विषय प्रकार, मनोवैज्ञानिक समृद्धि ग लिंग ग विषय प्रकार का अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया। जिसमें उच्च मनोवैज्ञानिक समृद्धि वाले विद्यार्थियों का व्यवहार विचलन कम पाया गया है तथा छात्रों का छात्राओं की अपेक्षा परिवार में व्यवहार विचलन अधिक पाया गया है जिसका कारण पारिवारिक वातावरण का अच्छा न होना, उचित पालन पोषण की कमी, परिवार में भावनात्मक संबंध का अभाव, परिवार में व्यवहार विचलन को प्रभावित करता है इसी प्रकार बालकों का घर में असंयमित व्यवहार एवं अनुशासनहीनता को ध्यान ना देना आदि कारक उनके पारिवारिक विचलन के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। इसी प्रकार विषय प्रकार के अंतर्गत सर्वाधिक परिवार में व्यवहार विचलन निम्न मनोवैज्ञानिक समृद्धि वाणिज्य विषय के छात्रों में पाया गया तथा उच्च मनोवैज्ञानिक समृद्धि वाले विज्ञान विषय की छात्राओं में व्यवहार विचरण सबसे कम पाया गया।

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का व्यवहार विचलन के चतुर्थ आयाम "मित्र समूह में व्यवहार" पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव -

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि विषय प्रकार का उनके मित्र समूह में व्यवहार ;व्यवहार विचलन का चतुर्थ आयामद्ध पर मुख्य प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया है। मनोवैज्ञानिक समृद्धि का मित्र समूह में व्यवहार ;व्यवहार विचलन का चतुर्थ आयामद्ध का प्रभाव इसलिए नहीं पाया गया क्योंकि मित्रता व्यवहार केवल व्यक्तिगत खुशी से प्रभावित नहीं होती अपितु मित्रता और सामाजिक व्यवहार अनेक जटिल आंतरिक और बाह्य कारकों से प्रभावित होते हैं इसी प्रकार विषय प्रकार का प्रकार के कारण भी विद्यार्थियों के मित्र समूह में व्यवहार को प्रभावित नहीं करते।

किशोर विद्यार्थियों के लिंग का उनके मित्र समूह में व्यवहार पर मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया है अध्ययन में छात्रों के मित्र समूह व्यवहार में छात्राओं की अपेक्षा अधिक व्यवहार विचलन पाया गया है क्योंकि लड़कियों के मित्रता सम्बन्ध में भावात्मक निकटता और संवेदनशीलता अधिक होती है जबकि लड़कों के संबंधों में गतिविधि आधारित सहभागिता अधिक होती है जिससे उनमें प्रतिद्वंदता भी होती है जिसके कारण आपस में व्यवहार प्रभावित होता है।

इसी श्रृंखला में किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि ग लिंग, लिंग ग विषय प्रकार, मनोवैज्ञानिक समृद्धि ग लिंग ग विषय प्रकार का मित्र समूह में व्यवहार ;व्यवहार विचलन का चतुर्थ आयामद्ध अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया है जिसमें उच्च मनोवैज्ञानिक समृद्धि वाले विद्यार्थियों का समूह में व्यवहार विचलन, निम्न मनोवैज्ञानिक समृद्धि वाले विद्यार्थियों से कम विचलित पाया गया है इसका कारण यह हो सकता है की मनोवैज्ञानिक समृद्धि ;अर्थात संतोष, आत्मसम्मान, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोणद्ध अधिक होता है वे मित्रों के साथ

अधिक सहयोगात्मक सहानुभूति पूर्ण और संतुलित व्यवहार करते हैं। इसी प्रकार छात्रों में छात्राओं की तुलना में अधिक व्यवहार विचलन पाया गया क्योंकि भावनात्मक अभिव्यक्ति के तरीके, समूह में व्यवहार में अंतर और सामाजिक अपेक्षाओं के कारण छात्र और छात्राएं मित्रों के साथ अलग-अलग व्यवहार प्रदर्शित करती है इसलिए मित्रों के साथ व्यवहार पर प्रभाव दिखाई देता है साथ ही विषय प्रकार विद्यार्थियों के विचार, करने संवाद शैली और सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करता है इसलिए विद्यार्थी किस विषय में पढ़ाई कर रहे हैं इसका भी उनके मित्र समूह के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है।

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि विषय प्रकार का उनके मित्र समूह में व्यवहार (व्यवहार विचलन के चतुर्थ आयाम) पर अतः रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया है क्योंकि किशोरावस्था में मित्र समूह व्यवहार मुख्यतः भावात्मक, सामाजिक, और व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर आधारित होता है इसलिए मनोवैज्ञानिक एवं विषय प्रकार कारक इनके मित्र समूह में व्यवहार को प्रभावित नहीं करते हैं

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि, लिंग, एवं विषय का आलोचनात्मक चिंतन पर प्रभाव -

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि एवं विषय प्रकार का आलोचनात्मक चिंतन पर मुख्य प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया है क्योंकि मनोवैज्ञानिक समृद्धि और आलोचनात्मक चिंतन दोनों अलग-अलग मानसिक प्रक्रियाएँ है। समृद्धि से विद्यार्थी भावनात्मक रूप से सशक्त हो सकते हैं किंतु मनोवैज्ञानिक समृद्धि उनके विशेषणात्मक रूप से सोचने की क्षमता को सीधे नहीं बढ़ाता। आलोचनात्मक चिंतन शिक्षा, अभ्यास, जिज्ञासा और संज्ञानात्मक विकास पर अधिक निर्भर करता है। इसी प्रकार विषय प्रकार का भी आलोचनात्मक चिंतन पर मुख्य प्रभाव नहीं पाया गया है विद्यार्थियों के विषय प्रकार आलोचनात्मक चिंतन को प्रभवित नहीं करते इसका कारण यह हो सकता है की किशोरों की मस्तिष्कीय विकास की अवस्था, शिक्षा में रटने पर बल, विषयो का चयन वास्तविक रूचि अनुसार न करना तथा शिक्षण में आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा न देना, आदि प्रमुख कारक आलोचनात्मक चिंतन को प्रभावित करते है।

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि किशोर विद्यार्थियों के लिंग का उनके आलोचनात्मक चिंतन पर मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया अध्ययन में छात्राओं का आलोचनात्मक चिंतन छात्रों से अधिक पाया गया क्योंकि वह भावनात्मक रूप से संवेदनशील, शिक्षण में अनुशासित एवं उनमें विषयों को विश्लेषणात्मक दृष्टि से चिंतन करने की प्रवृत्ति पाई जाती है इसके अतिरिक्त सामाजिक सजगता और आंतरिक प्रेरणा उनके आलोचनात्मक चिंतन के विकास में सहायक होती है। **जेट्रियस्लिटा एवं अन्य (2016)** ने अपने अध्ययन में पाया की छात्राओं में छात्रों की तुलना में आलोचनात्मक चिंतन करने की क्षमता अधिक पाई जाती है किंतु फहीमे एवं अफसानेह (2016) ने अपने अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं के आलोचनात्मक चिंतन में सार्थक अंतर नहीं पाया।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि x लिंग, मनोवैज्ञानिक समृद्धि x विषय प्रकार, मनोवैज्ञानिक समृद्धि x लिंग x विषय प्रकार का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया। इसका तात्पर्य है कि मनोवैज्ञानिक समृद्धि लिंग एवं विषय प्रकार संयुक्त रूप से आलोचनात्मक चिंतन को प्रभावित करते है विद्यार्थियों के सोचने की शैली आत्मविश्वास और विषयगत दृष्टिकोण को इस तरह से प्रभावित करते है की उनका आलोचनात्मक चिंतन या तो विकसित होता है या दब जाता है यही है कि इनका अन्तः क्रियात्मक प्रभाव, आलोचनात्मक चिंतन पर महत्वपूर्ण रूप से दिखाई देता है। निम्न मनोवैज्ञानिक समृद्धि वाले वाणिज्य विषय के किशोर विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन अपेक्षाकृत अधिक पाया गया, इसका कारण यह हो सकता है की कम मानसिक संतुलन और असंतोष की स्थिति में विद्यार्थी अक्सर क्यों? और कैसे? जैसे सवाल अधिक पूछते हैं। जब वे अपने जीवन, शिक्षा या समाज से संतुष्ट नहीं होते, तो वे कारणों की खोज में गहराई से सोचने लगते हैं, मनोवैज्ञानिक रूप से संतुलित होना एक सकारात्मक स्थिति मानी जाती है, लेकिन आलोचनात्मक चिंतन के विकास में मानसिक संघर्ष भी एक प्रेरक कारक बन सकता है। जो की कभी-कभी छात्रों में विषय को भी ले कर हो सकता है।

किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि विषय प्रकार का उनके आलोचनात्मक चिंतन पर अन्तः क्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया गया क्योंकि इन कारको का चिंतनात्मक क्षमता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता। किशोरावस्था में आलोचनात्मक चिंतन विकासशील प्रक्रिया में होता है किशोरों का मस्तिष्क विशेष रूप से प्रीफ्रंटल कोर्टेक्स पूर्ण विकसित नहीं होता जो सोचने विश्लेषण करने निर्णय लेने का कार्य करता है परन्तु पूर्ण विकसित नहीं होता और शिक्षा प्रणाली में आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करने का आभाव है जिसके कारण मनोवैज्ञानिक समृद्धि एवं विषय चयन का आलोचनात्मक चिंतन पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव नही पाया गया।

भेदात्मक परिकल्पनाओं की विवेचना

कोरबा जिले के किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का लिंग एवं विषय प्रकार के आधार पर सांख्यकीय मापन का विवरण

क्रमांक	चर	मनोवैज्ञानिक समृद्धि	
1.	**लिंग**	0.05 सार्थक स्तर के मान पर सार्थक अंतर पाया गया	
2.	**विषय प्रकार**	विज्ञान एवं कला	सार्थक अंतर नहीं
		कला एवं वाणिज्य	सार्थक अंतर नहीं
		विज्ञान एवं वाणिज्य	सार्थक अंतर नहीं

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

उपरोक्त सारिणी में किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का लिंग एवं विषय प्रकार के आधार पर विज्ञान एवं कला के विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि के मध्य सार्थक अंतर पाया गया जिसके परिणाम निम्न है -

लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में छात्रों की तुलना में मनोवैज्ञानिक समृद्धि ज्यादा पाया गया। **ए. सना (2015)** का अध्ययन इस अध्ययन का समर्थन करता है, इन्होने किशोर विद्यार्थी के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का छात्र एवं छात्राओं के मध्य सार्थक अंतर पाया।

विज्ञान एवं कला विषय के विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक समृद्धि में अंतर नहीं पाया गया इसका कारण यह हो सकता है की इन दोनों विषयों के छात्रों की मानसिक स्थिति, खुशी, आत्म-संतोष और तनाव का स्तर लगभग समान पाया गया। विज्ञान में जहाँ तकनीकी कठिनाइयाँ और प्रतिस्पर्धा होती है, वहीं कला में रचनात्मक दबाव और करियर की अनिश्चितता होती है। दोनों में तनाव और अवसर बराबर होते हैं, जिससे छात्रों की मानसिक स्थिति लगभग समान बनी रहती है। अधिकतर छात्र विज्ञान या कला विषय अपनी रुचि के अनुसार चुनते हैं। जब कोई अपनी पसंद का काम करता है, तो वह मानसिक रूप से अधिक संतुष्ट और खुश रहता है चाहे वह कला हो या विज्ञान।

कला एवं वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया इसका कारण दोनों ही समूहों में तनाव का स्तर कम शिक्षण व सामान सामाजिक वातावरण और विकास की दिशा में मानसिक सहूलियत, मानसिक रूप से स्थिरता और संतुलन आदि करक हो सकते है।

इसी प्रकार वाणिज्य एवं विज्ञान विषय के विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया क्योंकि दोनों ही वर्गों में शैक्षिक संरचना प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण करियर लक्ष्यता संसाधनों की उपलब्धता और मानसिक चुनौतियाँ सामान होती है जिससे उनका मानसिक विकास सामान रहता है।

सहसंबंधात्मक परिकल्पना की विवेचना

किशोर विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन की विवेचना का विवरण

क्रमांक	चर	सहसंबंध
1	व्यवहार विचलन	r = -0.137
2	आलोचनात्मक चिंतन	

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

उपरोक्त सारणी में कोरबा जिले के किशोर विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया जिनके मध्य ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। शोध द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन और आलोचनात्मक सोच के बीच नकारात्मक सहसंबंध पाया गया। दोनो चरो के मध्य नकारात्मक सहसंबंध पाया गया जिसका तात्पर्य है कि विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन जैसे-जैसे अधिक होगा उनमें आलोचनात्मक चिंतन करने कि क्षमता कम होगी। अतः स्पष्ट है कि विद्यार्थियों का बढ़ता विचलित व्यवहार उनके आलोचनात्मक चिंतन करने के कौशल में कमी करता है। अतः विचलित व्यवहार प्रदर्शित करने वाले छात्र आलोचनात्मक सोच कौशल के निम्न स्तर का प्रदर्शन करते हैं, जैसे-जैसे छात्र अधिक विघटनकारी या गैर-मानक व्यवहार में संलग्न होते हैं, उनकी जानकारी का विश्लेषण करने, साक्ष्य का मूल्यांकन करने और तार्किक रूप से तर्क करने की क्षमता अक्सर कम हो जाती है।

निष्कर्ष

कोरबा जिले के किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का उनके व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया द्य किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि एवं विषय प्रकार का मुख्य प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया। लिंग एवं विषय प्रकार के आधार पर किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का उनके व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया। लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि पर सार्थक अंतर पाया गया तथा विषय प्रकार के आधार पर मनोवैज्ञानिक समृद्धि का सार्थक अंतर नहीं पाया गया। किशोर विद्यार्थियों के व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

शैक्षिक महत्त्व

इस अध्ययन के द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है उनके आधार पर निम्नांकित शैक्षिक महत्व हो सकते हैं-

- प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि तथा व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
- विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक समृद्धि एक सशक्त और प्रगतिशील समाज की नींव है अतः प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समृद्धि की ओर अभिभावकों, शिक्षकों का ध्यान आकृष्ट करने में सहायक सिद्ध होगा, जिससे वे बेहतर, शांतिपूर्ण एवं सभ्य विकसित समाज के निर्माण की ओर अग्रसर हो सकते हैं।
- विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक समृद्धि से समाज को अनेक लाभ होते है क्योंकि जब विद्यार्थी स्वस्थ्य, संतुलित और सकारात्मक होते हं ै तो वे समाज के निर्माण में अधिक प्रभावी भूमिका निभाते हैं।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

- प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि के सभी पक्षों की पहचान कर उसे विकसित करने सम्बन्धी समस्त बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है जो कि समाज में रचनात्मकता, तकनीकी, शैक्षिक प्रगति के विकास में सहायक होगा।
- प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों के व्यवहार में आने वाले विचलनों के कारणों को समझकर शिक्षण पद्धतियों और पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करने में सहायक होगा, जिससे शिक्षा प्रणाली अधिक समावेशी और प्रभावी बन सके।
- प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों के व्यवहार विचलनों के सभी पक्ष का अध्ययन कर, अभिभावकों हेतु वातावरण में आवश्यक सकारात्मक परिवर्तन करने में सहायक हो सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास हो सके।
- प्रस्तुत अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन पर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया गया है, जिससे विद्यार्थियों में रचनात्मकता, नवाचार, तार्किकता एवं निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो सके और वे नवीन तकनीकी युग में सफल हो सके।
- प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों को आलोचनात्मक चिंतन एवं रचनात्मकता से परिपूर्ण कर उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने में सहायक सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Aggarwal, A.,Bakht,F., & Malhotra, S.(2024). A Study of Relationship between Psychological Well-being and Perceived Stress among Secondary Stage Students of Mohali, Punjab. *The International Journal of Indian Psychology*,12(4),224-236.

Akhtar, S. (2015). Psychological well-being in student of Gender Difference. *The International Journal of Indian Psychology, 2(4),* 153–161

Arisoy, B., & Aybek, B. (2021). The Effects of Subject-Based Critical Thinking Education in Mathematics on students' critical thinking skills and virtues. *Eurasian Journal of Educational Research*, *21*(92). https://doi.org/10.14689/ejer.2021.92.6

Arjun, A., Dakshinamurthy, R., & Rajavel, N. (2022). Adolescent psychological well-being & sociodemographic profile in Kerala, India. *International Journal of Health Sciences*, 7054–7066. https://doi.org/10.53730/ijhs.v6ns5.10228

Arslan, G. (2023). Psychological Well-Being and Mental Health in Youth: Technical Adequacy of the Comprehensive Inventory of Thriving. Children. *National Library of Medicine*. 10(7), 1269. https://doi.org/10.3390/children10071269

Asiyai, R. I. (2019). Deviant Behaviour in Secondary School and its Impact on Students' Learning. *Journal of Educational and Social Research*, *9*(3), 170–177. https://doi.org/10.2478/jesr-2019-0034

Audrin, C., & Blaya, C. (2020). Psychological Well-Being in a Connected World: The impact of cybervictimization in children's and young people's life in France. *Frontiers in Psychology*, 11. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2020.01427

Aute, D., Poipoi, M., & Khasakhala, O. E. (2020). Parental attachment, gender and deviant behaviour among secondary school students in Homabay County- Kenya. *London Journal of Research in Humanities and Social Sciences*, *20*(5), 1-16.

Bagheri, F., & Ghanizadeh, A. (2016). Critical thinking and gender differences in academic self-regulation in higher education. *Journal of Applied Linguistics and Language Research*, *3*(3), 133–145.

Bailey, T. C., Eng, W., Frisch, M. B., & Snyder, C. R. (2007). Hope and optimism as related to life satisfaction. *The Journal of Positive Psychology*, *2*(3), 168–175. https://doi.org/10.1080/17439760701409546

Barman, N., & Khanikor, M. S. (2018). Prevalence of Behavioural Problems among School Children: A Pilot Study. *International Journal of Health Sciences and Research*, *8*(12), 95–101.

Bartram, D. (2021). Age and Life Satisfaction: Getting Control Variables under Control. *Sociology*. **55** (2): 421–437. https://doi.org/10.1177/0038038520926871

Ben-Shahar, Tal (2007). Happier : Learn the Secrets to Daily Joy and Lasting Fulfillment. McGraw Hill Professional.

Bhat, B. A. (2018). A Study of Psychological Well-Being of Adolescents in Relation to School Environment and Place of Living. *International Journal of Movement Education and Social Science, 7*, 605–613. http://files.eric.ed.gov/fulltext/ED610348.pdf

Bhuttah, T. M., Xusheng, Q., Abid, M. N., & Sharma, S. (2024). Enhancing student critical thinking and learning outcomes through innovative pedagogical approaches in higher education: the mediating role of inclusive leadership. *Scientific Reports*, *14*(1). 1-13. https://doi.org/10.1038/s41598-024-75379-0

Blanchflower, D.; Oswald, A. (2008). "Is well-being U-shaped over the life cycle?". *Social Science & Medicine*. **66** (8): 1733–1749. 0.1016/j.socscimed.2008.01.030.

Bowman, J. L., & Dollahite, D. C. (2013). Why would such a person dream about heaven? Family, faith, and happiness in arranged marriages in India. *Journal of Comparative Family Studies, 44*(2), 207–225.

Burger, Kaspar; Samuel, Robin (2017). "The Role of Perceived Stress and Self-Efficacy in Young People's Life Satisfaction: A Longitudinal Study". *Journal of Youth and Adolescence*. 46 (1): 78–90.

Carlos, J., & Esther, P. (2023). Critical Thinking and Student Well-Being: An Approach in University Students. *Societies*, 13(11), 232. https://doi.org/10.3390/soc13110232

Cheng, J. (2012).The Effect Factor for Students' Deviant Behavior" The Journal of Human Resource and Adult Learning, 8,(2), 26-32.

Chikwature, W., Oyedele, V. I., & Ganyani, I. (2016). Effects of Deviant Behavior on academic performance in mutare urban primary schools in mutare district. European journal of psychological research, 3(1), 35-45.

De-Juanas, Á., Romero, T. B., & Goig, R. (2020). The Relationship between Psychological Well-Being and Autonomy in Young people according to Age. *Frontiers in Psychology*, 11. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2020.559976

DeNeve, K. M., & Cooper, H. (1998). The happy personality: A meta-analysis of 137 personality traits and subjective well-being. *Psychological Bulletin*, *124*(2), 197–229. https://doi.org/10.1037/0033-2909.124.2.197

Diener, E., & Diener, M. (1995). Cross-cultural correlates of life satisfaction and self-esteem. *Journal of Personality and Social Psychology*, *68*(4), 653–663. https://doi.org/10.1037/0022-3514.68.4.653

Dierendonck, D.V., Lam, H.(2023). Interventions to enhance eudaemonic psychological well-being: A meta-analytic review with Ryff's Scales of Psychological Well-being. *Applied Psychology Health and Well Being*. 2023;15(2):594-610. https://doi.org/10.1111/aphw.12398

Dullas, A. R., Yncierto, K. D., Labiano, M. A., & Marcelo, J. C. (2021). Determinants of a variety of deviant behaviors: An analysis of family satisfaction, personality traits, and their relationship to deviant behaviors among Filipino adolescents. *Frontiers in Psychology*, *12*. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2021.645126

Eroglu, Y., Peker, A., & Cengiz, S. (2022). Cyber victimization and well-being in adolescents: The sequential mediation role of forgiveness and coping with cyberbullying. *Frontiers in Psychology*, 13. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2022.819049

Georgellis, Y., Tsitsianis, N., & Yin, Y. P. (2008). Personal Values as Mitigating Factors in the Link Between Income and Life Satisfaction: Evidence from the European Social Survey. *Social Indicators Research*, *91*(3), 329–344. https://doi.org/10.1007/s11205-008-9344-2

Ghazivakili, Z., Nia, R. N., Panahi, F., Karimi, M., Gholsorkhi, H., & Ahmadi, Z. (2014). The role of critical thinking architectures and learning styles of university students in their academic performance. *Journal of Advances in Medical Education and Professionalism*, 2(3), 95-102. https://pmc.ncbi.nlm.n

Glenn, N. (2009). Is the apparent U-shape of well-being over the life course a result of inappropriate use of control variables? A commentary on Blanchflower and Oswald Social Science & Medicine, 69(4), 481–485. https://doi.org/10.1016/j.socscimed.2009.05.038

Guamanga, M. H., Saiz, C., Rivas, S. F., & Almeida, L. S. (2024). Analysis of the contribution of critical thinking and psychological well-being to academic performance. *Frontiers in Education*, *9*. https://doi.org/10.3389/feduc.2024.1423441

Gürel, N. A. (2009). Effects of thinking styles and gender on psychological well-being. https://open.metu.edu.tr/handle/11511/1888 ih.gov/articles/PMC4235550

Hagmaier, T., Abele, A. E., & Goebel, K. (2018). How do career satisfaction and life satisfaction associate? *Journal of Managerial Psychology*, *33*(2), 142–160. https://doi.org/10.1108/jmp-09-2017-0326

Halpern, D. F. (2007). The nature and nurture of critical thinking. *Critical thinking in Psychology*, 2(1), 1–14. https://doi.org/10.1017/cbo9780511804632.002

Hanimoglu, E. (2018). Deviant behaviour in school setting. *Journal of Education and Training Studies*,6 (10), 133-141.
https://doi.org/10.11114/jets.v6i10.3418
http://www.jallr.com/index.php/JALLR/article/download/304/pdf304
https://dl.icdst.org/pdfs/files/91c48e3a7414127822ff058a2b2f3e42.pdf
https://doi.org/10.1186/s41155-016-0035-7
https://www.ijhsr.org/IJHSR_Vol.8_Issue.12_Dec2018/16.pdf

Huppert, F. A. (2009). Psychological Well-being: Evidence Regarding its Causes and Consequences†. *Applied Psychology Health and Well-Being*, 1(2), 137–164. https://doi.org/10.1111/j.1758-0854.2009.01008.

Inam, A. (2024) Fostering Critical Thinking in Indian Students Through Interdisciplinary STEAM Pedagogies.*Quest Journals Journal of Education, Arts, Law and Multidisplinary,*14 (2). 23-30. https://doi.org/10.35629/2895-14022330

Jankowski, K. S. (2012). Morningness/Eveningness and satisfaction with life in a Polish sample. *Chronobiology International*, *29*(6), 780–785 https://doi.org/10.3109/07420528.2012.685671

Jayaram, B., Caeiro, Mr. D., Jayaam B, & Caeiro D. (2017). Teachers' Perception about Students Indulging in Deviant Behaviour. *The International Journal of Indian Psychology*, 4(2), 85–86. https://www.researchgate.net/profile/DonCaeiro/publication/348231100_Teachers'_Perception_about_Students_Indulging_in_Deviant_Behaviour/links/5ff4252645851553a01de6b1/Teachers-Perception-about-Students-Indulging-in-Deviant-Behaviour.pdf

Jenny, S. (2022). The Secret to Happiness Is Helping Others. https://time.com/collection/guide-to-happiness/4070299/secret-to-happiness/

Juan.H., Estefanı.V., Gonzalo, M. (2006). The relationships of adolescent school-related deviant behaviour and victimization with psychological distress: Testing a general model of the mediational role of parents and teachers across groups of gender and age. *Journal of Adolescence*. 29(3), 671–690.

Kahneman, D., & Deaton, A. (2010). High income improves evaluation of life but not emotional well-being. *Proceedings of the National Academy of Sciences*, *107*(38), 16489–16493. https://doi.org/10.1073/pnas.1011492107

Kislev, E. (2019). Social Capital, Happiness, and the Unmarried: a Multilevel Analysis of 32 European Countries. *Applied Research in Quality of Life*, *15*(5), 1475–1492. https://doi.org/10.1007/s11482-019-09751-y

Kumar, M. J. (2024). The imperative of critical thinking in higher education. *IETE Technical Review*, *41*(5), 509–510. https://doi.org/10.1080/02564602.2024.2390290

Kumari, D. (2024). National Education Policy 2020: A Transformative Shift in Education to Foster Critical Thinking among Students. *International Journal for Multidisciplinary Research*, *6*(2). https://doi.org/10.36948/ijfmr.2024.v06i02.17721

Leach, B. T. (2011). Critical thinking skills as related to university students gender and academic discipline. *International Journal of Humanities and Social Sciences*, 1(21), 100-106. http://www.ijhssnet.com/journals/Vol_1_No_21_Special_Issue_December_2011/12.pdf

Maennig, W., Steenbeck, M., & Wilhelm, M. (2013). Rhythms and cycles in happiness.*Applied Economics*, *46*(1), 70–78. https://doi.org/10.1080/00036846.2013.829206

Mizobuchi, H. (2013). Measuring World Better Life Frontier: a composite indicator for OECD Better Life Index. *Social Indicators Research*, *118*(3), 987–1007. https://doi.org/10.1007/s11205-013-0457-x

Mogbana, M. A., Edward, C. O., & Chinwe. (2022). Deviant behaviours in schools: implications for counselling. In *Journal of Educational Research and Development, 5*(1), 9–18.

Moghe, S., & Misra, S. (2024). A study on psychological well-being among university students. *International Journal of Indian Psychology*, 12(1), 2634-2643.

Murawski, L. M. (2014). Critical thinking in the classroom.and beyond. *Journal of Learning in Higher Education*, *10*(1), 25–30. http://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1143316.pdf

Nabiswa, J., Page, Misigo, B. L., & Makhanu, F. N. (2016). Analysis of student deviant behaviour most prevalent in schools of Bungoma County. *Journal of Research in Humanities and Social Science* 4(11),19-23.

Nag, S.K., & Dwivedi, S. (2024). Effect of critical thinking on decision making efficacy of students at senior secondary level. *The International journal of Indian psychology*,12(3) 21-29. 10.25215/1203.003

Nalah, A., Bala, N. A., Ishaya, D. L., & Daniel. (2013). A Conceptual Overview of Deviance and Its Implication to Mental Health: a Bio psychosocial Perspective. *ResearchGate*. https://doi.org/10.1037/rnd0000001

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

Nijoroge, E., Jane, K. (2020). Influence of deviant behaviour on psycho-social well-being of students in public secondary schools in ruiru sub county, kiambu county, kenya. *International Journal of Research and Innovation in Social Science*. 4(5),2454-6186.

Otálora, A. R., & Barros, A. S. S. (2014). Psychological Well-being (PWB) and Personal Problems (PP) in University Students: A Descriptive Study in Distance Learning Context, Preliminary results. *Procedia - Social and Behavioral Sciences*, *132*, 427–433. https://doi.org/10.1016/j.sbspro.2014.04.332

Palgi, Y., & Shmotkin, D. (2010). The predicament of time near the end of life: Time perspective trajectories of life satisfaction among the old-old. *Aging & Mental Health*, *14*(5), 577–586. https://doi.org/10.1080/13607860903483086

Parveen, P. A., Raja, W., & Bhat, R. A. (2023). Parenting and Behavioural Deviance among Adolescents: A Descriptive Study. *Journal of applied research in education*, 27(1),134-141.

Patel, P. J. (2020). Declining Social Control and the Rising Deviant Behaviour in India. *Sociological Bulletin*. https://doi.org/10.1177/0038022919899000

Peng, Y. (2024). Enhancing cross-cultural well-being: A mixed methods study on critical thinking, cultural intelligence, and eudaimonic well-being in arts students' cultural identity development. *Frontiers in Psychology*, *15*, 1425929. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2024.1425929

Potdar, N., Audhakar, C.D., & Mohite V.R (2019). To Identify the Level of Psychological Well-Being among Secondary School Students. *International Journal of Science and Research.* vol.8(2),159-163.

Punia, N., & Malaviya, R. (2015). Psychological well-being of first year college students. *Indian Journal of Education Studies*, 2(1), 60-61.

Raj, T., Chauhan, P., Mehrotra, R., & Sharma, M. (2022). Importance of critical thinking in the education. *World Journal of English Language*, *12*(3), 126. https://doi.org/10.5430/wjel.v12n3p126

Raju, M., Lavanya, S., & Shashanka, B. M. (2020). Critical thinking: An empirical study on undergraduate students to enhance speaking skills through critical thinking. Journal of Critical Reviews, 7(5), 684-691. https://doi.org/10.31838/jcr.07.05.142

Rebellow, M. R. (2015). Factors influencing Deviant Behaviour among adolescents. *Indian Journal of Applied Research*, *5*(10), 583-584. https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-(IJAR)/recent_issues_pdf/2015/October/October_2015_1492517568__181.pdf

Rich, G., & Scott, H. (2003). A Review of Life Satisfaction Research with Children and Adolescents. *School Psychology Quarterly*, 18 (2), 192–205.

Roslan, S., Ahmad, N., Nabilla, N., & Ghiami, Z. (2017). Psychological Well-being among Postgraduate Students. *Acta Medica Bulgarica*, *44*(1), 35–41. https://doi.org/10.1515/amb-2017-0006

Ryan, R. M., & Deci, E. L. (2000). Self-determination theory and the facilitation of intrinsic motivation, social development, and well-being. *American Psychologist*, *55*(1), 68–78. https://doi.org/10.1037/0003-066x.55.1.68

Ryff, C. D. (2013). Psychological Well-Being Revisited: Advances in the science and practice of Eudaimonia. *Psychotherapy and Psychosomatics*, *83*(1), 10–28. https://doi.org/10.1159/000353263

Sanches, C., Gouveia-Pereira, M., Marôco, J., Gomes, H., & Roncon, F. (2016). Deviant behavior variety scale: development and validation with a sample of Portuguese adolescents. *Psicologia Reflexão E Crítica*, *29*(1), 1-8.

Shaheen, N. (2016). International students' critical thinking–related problem areas: UK university teachers' perspectives. *Journal of Research in International Education*, *15*(1), 18–31. https://doi.org/10.1177/1475240916635895

Shahina, G. & Parveen, A. (2022). A Study of Psychological Well-Being Among Adolescents in Relation to Meaning in Life and Personal Growth Initiative. *International Journal of Indian Psychology*, *10(3),* 1414-1425.10.25215/1003.151

Sharief, S., & Goyal, P. (2022). Exploring the correlation between Critical Thinking abilities and Psychological well-being in college students of west Uttar Pradesh. International for recent developments in science & technology, 6(11), 197-202. https://ijrdst.org/public/uploads/paper/390711711689189.pdf

Sharma, A., & Sharma, R. (2018). Internet addiction and psychological well-being among college students: A cross-sectional study from Central India. *Journal of Family Medicine and Primary Care*, *7*(1), 147. https://doi.org/10.4103/jfmpc.jfmpc_189_17

Sherafat, N. R. (2015). Critical Thinking, Reasoning, and Logical Concluding' Abilities in relation to Academic Achievement among Indian Adolescent Students. *International Journal of Indian Psychology*, *3*(1), 145-154. https://doi.org/10.25215/0301.165

Sophie, G., Philippe, C. (2010). Contributions of Psychological Well-Being and Social Support to an Integrative Model of Subjective Health in Later Adulthood. *Ageing International*, 35 (1), 38–60.

Stubbe, J. H., Posthuma, D., Boomsma, D. I., & De Geus, E. J. C. (2005). Heritability of life satisfaction in adults: a twin-family study. *Psychological Medicine*, *35*(11), 1581–1588. https://doi.org/10.1017/s0033291705005374

Tajarod, F., Fazel, A., and Ghasemi, F. (2014). The Effects of Creative and Critical Thinking Skills on Psychological Well-Being of High School Students in Jahrom.*Tafakkaor va kudak*, 5(9),21-37.

VandenBos, G. R. (2007). APA dictionary of psychology. *Choice Reviews Online*, *44*(06).

Walsh, C. M., & Hardy, R. C. (1999). Dispositional differences in critical thinking related to gender and academic major. *Journal of Nursing Education*, 38(4), 149–155. https://doi.org/10.3928/0148-4834-19990401-04

Winefield, H. R., Gill, T. K., Taylor, A. W., & Pilkington, R. M. (2012). Psychological well-being and Psychological distress: is it necessary to measure both? *Psychology of Well-Being Theory Research and Practice*, *2*(1), 2211-1522. https://doi.org/10.1186/2211-1522-2-3

Witarsa, N., & Muhammad, S. (2023). Critical thinking as a necessity for social science students capacity development: How it can be strengthened through project based learning at university. *Frontiers in Education*, *7*. https://doi.org/10.3389/feduc.2022.983292

Yang, Y., & Jiang, J. (2023). Influence of family structure on adolescent deviant behavior and depression: the mediation roles of parental monitoring and school connectedness. *Public Health*, *217*, 1–6. https://doi.org/10.1016/j.puhe.2023.01.013

Zetriuslita, H., Ariawan, R., & Nufus, H. (2016). Students' Critical Thinking Ability: description based on academic level and gender. *Journal of Education and Practice*, *7*(12), 154–164. http://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1099476.pdf

रिफ्फ, सी. डी. (1989). क्या खुशी ही सब कुछ है, या नहीं? मनोवैज्ञानिक समृद्धि के अर्थ की खोज. जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 57(6), 1069-1081. https://doi-org/10-1037/0022&3514-57-6-1069

माश, ई. जे., एवं बार्केली, आर. ए. (2014). बाल मनोविकार (3रा संस्करण). गिलफोर्ड प्रेस, 120-130.

पाठक, पी.डी (2014). शैक्षिक मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, 136-145.

मंगला, एस.के. (2002). उच्चतर शैक्षिक मनोविज्ञान (द्वितीय संस्करण), नई दिल्ली, 124-137.

सिंह ए.के (2005). उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, 634-637.

शर्मा, आर. डी. (2022), सांख्यिकी, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 68-96.

गुप्ता, एस. सी. (2020). सांख्यिकी के सिद्धांत और अनुप्रयोग एस. चाँद एंड कंपनी, 117-172.

शर्मा, एस. पी. (2018). आधुनिक मनोविज्ञान (खंड 1) भारती मनोविज्ञान प्रकाशन, 38-74.

वर्मा, ए. के, (2020), मनोविज्ञान का परिचय (खंड 1)- नेशनल बुक डिपो, 102-119.

LINKS

https://endoxalearning.com/blog/critical_thinking/ctsubjects/

https://www.editage.com/insights/what-is-research-objective

https://www.verywellmind.com/improve-psychological-well-being-4177330

https://typeset.io/questions/what-is-purpose-of-the-study-in-research-2voy81257t

https://www.cliffsnotes.com/study-guides/sociology/deviance-crime-and-social-control/theories-of-deviance

https://www.scotbuzz.org/2017/06/chintan-ke-prakar.html

https://www.researchgate.net/publication/348231100_Teachers'_Perception_about_Students_Indulging_in_Deviant_Behaviour

https://www.researchgate.net/publication/349693033_DEVIANT_BEHAVIOURS_IN_SCHOOLS_IMPLICATION_FOR_COUNSELLING

https://www.editage.com/insights/what-is-research-objective